Pol. Sc
B.A. Part III, Paper 8th

साइमन कमीशन और नेहरू रिपोर्ट
Simon Commission and Nehru Report

1926 ई० में लार्ड इरविन भारत के वायसराय बनाये गये। 1927 ई० का वर्ष भारतीय राजनीति में एक विशेष स्थान रखता है। इस समय देश की हालत बहुत नाजुक थी। इस वर्ष स्वराजवादियों ने यह अनुभव किया कि उनकी असहयोग तथा अड़ंगा की नीति असफल हो चुकी है। कांग्रेस का नेतृत्व पूर्णतया गाँधी जी के ~~विरोधक~~ हाथ में आ गया। इसपर समाजवादी तथा साम्यवादी विचारों का प्रभाव पड़ने लगा। जहाँ-तहाँ मजदूरों और किसानों का आन्दोलन होने लगा। बारदोली में सरदार पटेल के नेतृत्व में किसानों ने लगान वृद्धि के विरोध में तीव्र आन्दोलन किया जिसके सामने सरकार को झुकना पड़ा। इस प्रकार 1927 ई० में राष्ट्रीय आन्दोलन जड़ पकड़ने लगा और जनता में जागृति आने लगी। इसी पृष्ठभूमि में साइमन कमीशन की नियुक्ति हुई और नेहरू रिपोर्ट भारतीयों के सामने आई।

साइमन कमीशन की नियुक्ति :— सन् 1919 ई० के भारत सरकार अधिनियम की धारा 84 में यह व्यवस्था की गयी थी कि सुधारों के ~~विषय~~ कार्यान्वित रूप पर विचार करने तथा नये सुधारों का सुझाव देने के लिए 10 वर्षों के उपरान्त सरकार एक राजकीय आयोग की नियुक्ति करेगा। इस धारा के अन्तर्गत 1929 ई० में राजकीय आयोग की नियुक्ती होनी थी, लेकिन कई कारणों से दो वर्ष पहले राजकीय आयोग की घोषणा कर दी गयी। 5 नवम्बर 1927 को वायसराय इरविन ने महात्मा गाँधी तथा अन्य दूसरे नेताओं को दिल्ली में भेंट करने के लिए आमंत्रित किया। महात्मा गाँधी राजकीय आयोग (Royal Commission) की योजना को सुनकर बहुत चिन्तित हुए, क्योंकि इस योजना में कोई नहीं दिखाई पड़ा। अन्तमें 8 नवम्बर 1927 को वायसराय ने एक राजकीय कमीशन की नियुक्ति की घोषणा की।

Scanned with CamScanner

कमीशन के अध्यक्ष के रूप में "सर जान साइमन" को नियुक्त किया गया, इसी कारण इसे साइमन कमीशन कहते हैं। कमीशन के अन्य सदस्य भी अंग्रेज ही थे इसके पीछे तर्क यह दिया गया, कि प्रथम, कमीशन की रिपोर्ट ब्रिटिश संसद में रखने का प्रस्ताव था। द्वितीय, भारत में अनेक वर्गों सम्प्रदायों धर्मों के अस्तित्व के कारण किसी-न-किसी वर्ग को असंतुष्ट करके ही किसी भारतीयों को साइमन कमीशन का सदस्य बनाया जा सकता था लेकिन ये दोनो तर्क बहाना मात्र थे।

सारमन कमिशन का बहिष्कार :— साइमन कमीशन के उद्देश्य तथा उसकी सदस्यता से भारतीयों को बहुत क्षोभ हुआ। उन्होंने इसे अपमानजनक समझा। अतः सभी एकमत से साइमन कमिशन का विरोध करने लगे। कांग्रेस ने दिसम्बर 1927 के मद्रास अधिवेशन में साइमन कमिशन के प्रति अपने दृष्टिकोण तथा नीति को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया। और अधिवेशन में कमीशन का हर हाल में बहिष्कार करने का निर्णय लिया गया।

उसने विभिन्न वर्गों के लोगो से कमीशन का बहिष्कार करने की अपील की। और यह भी अनुरोध किया कि कमीशन के दिन जनता सामूहिक प्रदर्शन करें जहाँ भी कमीशन आए, जनता द्वारा उसका विरोध किया जाए, किसी भी तरह का सहयोग नेता गण नही करे। ~~कार्यसमिति~~ कांग्रेस कार्यसमिति को यह अधिकार दिया गया कि वह बहिष्कार को प्रभावशाली बनाने के लिए दूसरी संस्थाओं से सहयोग प्राप्त करें। कांग्रेस ने इसि सम्मेलन में पूर्ण राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लक्ष्य की घोषणा की।

3 फरवरी, ~~1928~~ 1929 को साइमन कमीशन बंबई पहुँचा। उस दिन सारे देश में हड़ताल मनाई गई। पूरे देश में साइमन लौट जाओ (Simon goback) के नारे लगे। जहाँ भी कमीशन गया, उनका स्वागत काले झंडे से किया गया। पंजाब केसरी लाला लाजपत राय ने कमीशन के समक्ष एक विशाल प्रदर्शन ~~किया~~ का नेतृत्व किया, पुलिस ने भीड़ को तितर-बितर करने के लिए लाठी का प्रयोग किया, जिसमें लाला लाजपत राय घायल हो गये,

जवाहर लाल नेहरू
उत्तर प्रदेश में पंडित और पंडित गोविन्द वल्लभ पंत के साथ प्रदर्शन का नेतृत्व किया, कमीशन के आगमन के दिन सम्पूर्ण लखनऊ सैनिक शिविर के रूप में बदल गया। सरकार के अत्याचारपूर्ण तथा अमानुषिक व्यवहार से जनता में प्रतिशोध की भावना जागृत हो गयी, क्रान्तिकारी पुनः सक्रिय होगये। उन्होंने एक पुलिस अधिकारी की हत्या कर दी। सरदार भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभा में बम-विस्फोट किया। ऐसे अशान्तित वातावरण में कमीशन ने अपनी जाँच-पड़ताल शुरू की। कमीशन दो बार भारत आया। अपनी रिपोर्ट तैयार करने में दो वर्ष से अधिक का समय लिया। मई 1930 को साइमन कमीशन की रिपोर्ट तैयार हुयी।

साइमन कमीशन की रिपोर्ट :— साइमन कमीशन ने अपनी रिपोर्ट में निम्नलिखित सिफारिशें की।

1. अनेक त्रुटियों के कारण प्रान्तों के द्वैध शासन व्यवस्था को समाप्त कर देना चाहिए उनके स्थान पर पूर्णतया उत्तरदायी शासन की स्थापना होनी चाहिए प्रान्तीय सरकारों पर केन्द्र का नियन्त्रण कम से कम होना चाहिए।

2. अल्पसंख्यकों के अधिकार की सुरक्षा तथा प्रान्तों में शान्तिपूर्ण व्यवस्था को अधिक महत्वपूर्ण बनाने हेतु गवर्नर को अधिक अधिकार दिया जाना चाहिए।

3. केन्द्रीय सरकार की शासन-व्यवस्था में परिवर्तन के लिए कोई महत्वपूर्ण सिफारिश नही की गई। कमीशन के विचार में केन्द्र में शासन व्यवस्था सदा इसी प्रकार चलती रहेगी।

4. कमीशन ने भविष्य में भारत में एक संघ-शासन की स्थापना करने की सिफारिश की जिसमें प्रत्येक प्रान्त जहाँ तक सम्भव हो अपने क्षेत्र में स्वामी हो। इस संघ में ब्रिटिस भारत के प्रान्त और सभी भारतीय देशी राज्य सम्मिलित होंगे।

5. भारत संघ की स्थापना के पूर्व भारत में एक वृहत्तर भारत परिषद (Councial of Greator India) की स्थापना जाए जिसमें भारत के ब्रिटिश राज्य और देशी राज्यों के प्रतिनिधि सम्मिलित हों। इस परिषद द्वारा वे अपनी सामान्य समस्याओं का निराकरण करेंगे।

6. जनता में राजनीति चेतना लाने के लिए मताधिकार का विस्तार किया जाना चाहिए और ~~व्यवस्थापिका~~ प्रांतीय धारा-सभाओं की संख्या को बढ़ाना चाहिए।

7. बर्मा को भारत से और सिंध को बंबई से पृथक कर दिया जाए।
8. कमीशन ने यह सिफारिश की कि प्रतिनिधित्व का आधार साम्प्रदायिक मतदान होगा। अतः साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व को पूर्ववत जारी रखा जाए।
9. सेना का भारतीय करण किया जाए
10. समय-समय पर संसदीय जाँच-पड़ताल की पद्धति को छोड़ दिया जाए और ऐसे लचीले संविधान का निर्माण किया जाए जो स्वयं विकसित हो।
11. संघ की व्यवस्थापिका सभा का निर्माण संघीय व्यवस्था के आधार पर किया जाना चाहिए। उसके दोनों सदनों का चुनाव अप्रत्यक्ष निर्वाचन-पद्धति से होना चाहिए।

यदि हम साइमन कमीशन के रिपोर्ट का मूल्यांकन करें तो हम पाते हैं कि कमीशन ने भारतीय राजनीति की सभी कठिनाईयों और समस्याओं पर प्रकाश डाला, किन्तु उसने तत्कालीन भारत एवं और उसकी जनता की आकांक्षाओं का तनिक भी ध्यान नहीं दिया।

सर शिव स्वामी अय्यर ने तो यहाँ तक कहा था, साइमन कमीशन की रिपोर्ट को रद्दी की टोकरी में डाल देना चाहिए। निःसंदेह रिपोर्ट निरर्थक तथा रद्दी के कागज के भाव था। लेकिन, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में यह एक महत्वपूर्ण दस्तावेज था।

सर्वदलीय सम्मेलन :— साइमन कमीशन में भारतीयों को सम्मिलित नहीं करने का कारण आपस में मतभेद था। ऐसा साइमन कमीशन के सदस्य लॉर्ड बर्केनहेड ने कहा था। उसने भारतीयों को यह चुनौती दी कि भारतीय एक विधान का प्रारूप तैयार करके ब्रिटिश संसद के सामने प्रस्तुत करें जिसको सर्वसम्मति से तैयार किया हो। भारतीयों ने उसके इस चुनौती को स्वीकार किया। उन्होंने 1928 के फरवरी-मार्च के महीने में सर्वदलीय सम्मेलन का आयोजन किया, पंडित मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक समिति की नियुक्ति की गई। सर तेज बहादुर सप्रू, सर अली इमाम और नेताजी सुभाष चन्द्र बोस इसके सदस्य नियुक्त किए गये।

Scanned with CamScanner

समिति ने तीन महिने के बाद अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। भारतीय इतिहास में इसे नेहरू रिपोर्ट के नाम से जाना जाता है।

1. भारत को औपनिवेशिक स्वराज प्रदान किया जाना चाहिए उसका स्थान ब्रिटिश समाज के अन्तर्गत आने वाले अन्य उपनिवेशों के समान होना चाहिए।
2. केन्द्र में पूर्ण उत्तरदायी शासन की स्थापना होनी चाहिए। भारत के गवर्नर-जनरल को लोकप्रिय मंत्रिमंडल के परामर्श पर सांविधानिक प्रधान के रूप में कार्य करना चाहिए।
3. केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभा दो सदन वाली हो (Bicameral) हो और मंत्रिमण्डल उसके प्रति उत्तरदायी हो। निम्न सदन का चुनाव वयस्क मताधिकार पर प्रत्यक्ष पद्धति से हो और उच्च सदन का परोक्ष पद्धति से।
4. प्रान्तों में भी केन्द्र की भाँति उत्तरदायी शासन की स्थापना हो।
5. केन्द्र और प्रान्तों के बीच शक्तियों का विभाजन हो जिसमें अवशिष्ट शक्तियाँ (Residuary Power) केन्द्र के पास हो
6. साम्प्रदायिक निर्वाचन को समाप्त कर उसके स्थान पर संयुक्त निर्वाचन व्यवस्था का सुझाव दिया गया।
7. उत्तर-पश्चिम सीमाप्रान्त को ब्रिटिश भारत के अन्य प्रान्तों के समान वैधानिक स्तर प्राप्त होना चाहिए।
8. सिंध को बम्बई से अलग कर उसको अलग प्रान्त बनाया जाय।
9. रिपोर्ट में मौलिक अधिकारों का उल्लेख किया गया और उन्हें संविधान में स्थान देने की सिफारिश की गई।
10. रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि देशी राज्यों के अधिकारों तथा विशेषाधिकारों की रक्षा की व्यवस्था की जाय। साथ ही उन्हें यह भी चेतावनी दी गयी कि भारत संघ में उन्हें तभी सम्मिलित किया जाय जब उनके राज्य में उत्तरदायी शासन की स्थापना हो जाए।

नेहरू रिपोर्ट पर राजनीतिक दलों में भिन्न-भिन्न प्रतिक्रियाएं हुई। जिन्ना ने नेहरू रिपोर्ट के विकल्प के रूप में चौदह सूत्री कार्यक्रम प्रस्तुत किया। देशी नरेशों ने भी नेहरू रिपोर्ट का विरोध किया। फिर भी भारतीय संवैधानिक विकास के दृष्टिकोण से नेहरू रिपोर्ट एक मूल्यवान प्रलेख था। स्वतंत्र भारत का संविधान भी मूलतः नेहरू रिपोर्ट से बहुत-कुछ मिलता-जुलता है। सर असफर अहमद खाँ ने कहा था, नेहरू रिपोर्ट अत्यन्त रचनात्मक प्रयास था।

Scanned with CamScanner